

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ शम्भुशतक ॥

जिसम

प्रणमपाल, दीनदयाल, श्रीशम्भु भगवान् के गुणानु
वाद सम्पन्न की रूपद, भगवत्, देशजी तुमरी, - - -
गणपत गिरात्रिद्वीर्ष, गजेदार होलिया, बैती,
पाटो, मलार, कजरी, श्यामकल्याण, सोरठ, बिहाग,
परज, भैरवी, काफिये मिश्रित मनमोहनी लहरे, लावनी
गजल, दादरा, स्तुति, आरती आदि कई चाल के उत्त-
मोत्तम, १२५ पद भक्तद्विष्ट के कीर्तन करने योग्य धुनों
के लहय खपुक्त लिखे हैं ।

जिसे

भगवत् परगना ने गुरु जि आराजियाजी चौ० बलदेवप्रसाद
विह कुर्षी ॥१॥ ने अतीव परिश्रम से रचना किया ।

इस पुस्तक के प्रकाश करने का सर्वथा अधिकार
श्रीयुत बाबू श्रीकृष्ण वर्मा मालिक भारतजीवन
प्रेस को है ।

॥ काशी ॥

भारतजीवन प्रेस में बाबू श्रीकृष्ण वर्मा द्वारा मुद्रित ।

सन् १८११ ई० ।

प्रथम बार १०००]

[मूल ॥